17. १००८ श्री कुन्थनाथ जी

यक्ष
गन्धर्व

चिन्ह
बकरा

वर्ण
पीतवर्ण

यक्षिणी
महामनसी

अर्घ

जल चन्दन तन्दुल प्रसून चरु दीप धूप लेरी।
फल जुत जजन करो मम सुख धरि, हरो जगत फेरी।।
कुन्थु सुन अरज दास केरी, नाथ सुन अरज दास केरी।
भव सिंधु पर्‌यो हों नाथ निकारो बाँह पकर मेरी।।
प्रभु सुन अरज दास केरी नाथ सुन अरज दास केरी।
जग जाल पर्‌यो हों बेग निकारो बाँह पकर मेरी।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण कृष्णा-१०

गर्भकल्याणक

वैशाख शुक्ला-१

जन्मकल्याणक

वैशाख शुक्ला-१

तपकल्याणक

चैत्र शुक्ला-३

केवलज्ञान कल्याणक

पिता: सूर्यसेन

माता: श्रमिति देवी

मोक्ष स्थान श्री सम्मेदशिखर जी

वैशाख शुक्ला-१

मोक्षकल्याणक